सरकारी हाईस्कूल, दोड्डहल्ली

वर्णमाला में हिंदी साहित्यकार

हिन्दी
हमारी राष्ट्र भाषा
है।

हेच.वी.गोविंदराजशेट्टी

दूर भाषा: 94803 10454

वर्ण	साहित्यकार का नाम तथा जन्म	तस्वीर	ब्योरा	अन्य साहित्यकार	तस्वीर
अ	अमरकां 01-07-1925 बलिया	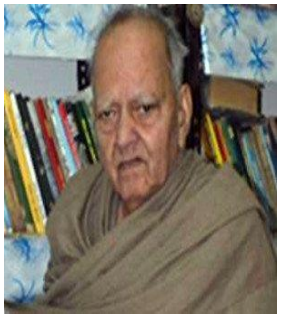	अमरकांतजी ने प्रेमचंद की सामाजिक, यथार्थवाद की परंपरा को तोड़कर एक नयी परंपरा का आरंभ किया।पत्रकार के रूप में कई पत्रिकाओं का संपदन किया	अमीर खुसरो अयोध्यासिंह उपाध्याय अज्ञेय	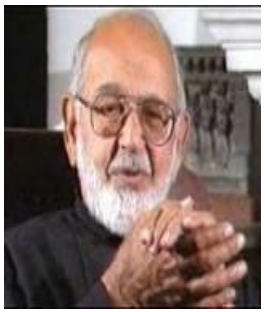
आ	आचार्य महावीप्रसाद द्विवेदी 1864 रायबरेली जिले के दौलतपुर गाँव	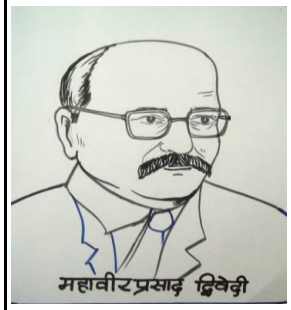	नवयुग के विधायक द्विवेदीजी ने ऐसे विशिष्ट रचनाकार हैं, जिन्होने हिंदी साहित्य व भाषा को तदयुगीन अराजकता से उबारकर निश्चित दिशा व व्यवस्था प्रदान की।	आचार्य नरेंद्रदेव आचार्य किशोरी दास वाजपेयी	

इ	इलाचंदजोशी 13-12-1902 अल्मोडा		जोशीजी ने उपन्यासकार ,कहानिकार, कवि,पत्रकार और समीक्षक के रूप में आधुनिक हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है।	इंद्रदेव नारायण इंद्रभूति (सिद्ध)	*
ई	ईश्वरदास	ईश्वरदास की जन्मतिथि उनकी सुप्रसिद्ध कृति "सत्यवती-कथा" के रचना काल (1501) के आधार पर अनुमित की जाती है। "सत्यवती-कथा" की रचना यदि कवि ईश्वरदास ने युवावस्था में की होगी , तो उनका जन्म 1480 ई के लगभग माना जा सकता है।			*
उ	उपेंद्रनाथ'अश्क 14-12-1910 जलन्धर	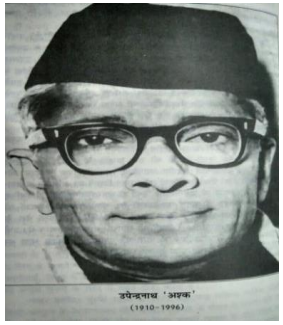	*"मध्यवर्ग के बुनियादी चित्रकार" अश्कजी ने हिंदी साहित्य की हर विधा में अपनी वैचारिक संपन्नता अनुभूति की तरलता और रचनात्मक कौशाल का प्रमाण दिया।*	उदित नारायण लाल उसमान उद्भट	*
ऊ	ऊजड़गाम (कृति)	यह श्रीधर पाठक जी की रचना है। इसकी भाषा ब्रजभाषा है।			*

ऋ	ऋग्वेद		ऋग्वेद सनातन धर्म अथवा हिन्दू धर्म का सबसे आरंभिक स्रोत है। इसमें १०२८ सूक्त हैं, जिनमें देवताओं की स्तुति की गयी है। इसमें देवताओं का यज्ञ में आह्वान करने के लिये मन्त्र हैं, यही सर्वप्रथम वेद है। यह संसार के उन सर्वप्रथम ग्रन्थों में से एक है जिसकी किसी रुप में मान्यता आज तक समाज में बनी हुई है।ऋग्वेद के कई सूक्तों में विभिन्न वैदिक देवताओं की स्तुति करने वाले मंत्र हैं। यद्यपि ऋग्वेद में अन्य प्रकार के सूक्त भी हैं, परन्तु देवताओं की स्तुति करने वाले स्तोत्रों की प्रधानता है। ऋग्वेद में कुल दस मण्डल हैं और उनमें १०२८ सूक्त हैं और कुल १०,५८० ऋचाएँ हैं। इन मण्डलों में कुछ मण्डल छोटे हैं और कुछ बड़े हैं।		
ए	एकांबरनाथ मिश्र	यह एक जासूसी उपन्यास कार हैं।			*
ऐ	*	*	*	*	*
ओ	ओमप्रकाश सिंहल	*	*	*	*

औ	हरिऔध 15-04-1865 निजामाबाद	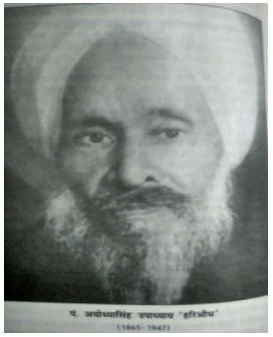	खडी बोली हिंदी साहित्य के प्रथम महाकवि हैं। हरिऔधजी ने कवि,चिन्तक,विद्वान,गद्य-लेखक तथा आचार्य इन समस्त भूमिकाओ में हिंदी साहित्य को समृद्ध किया।	*	*
अं	अंबिकादत्त व्यास चैत्र शुक्ल अष्टमी 1858 को जयपुर में		भारतेन्दु-मण्डल के गौरवपूर्ण-प्रतिष्ठित रचनाकार। संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान, बहुभाषाविद व्यासजी का पत्रकारिता क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान है।	अंबा प्रसाद	
अः	*	*	*	*	*

क	कबीर दास लहरतारा तलाब		सगुण केखंडन और निर्गुण के मंडन करने वाले कबीर दासजी ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रवर्तक हैं। बीज़क इनका उत्कृष्ट कृति है।	केशवदास केदारनाथ सिंह	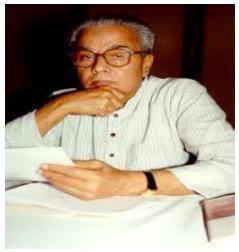
ख	देवकी नन्दन खत्री 01-08-1913 मुजफ्फरपुर	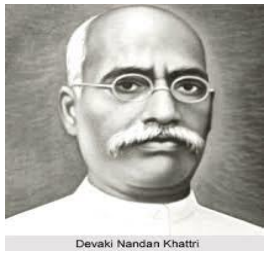 Devaki Nandan Khattri	खत्रीजी ने तिलिस्मी-ऐयारीउपन्यास के प्रवर्तक बनकर मनोरंजनधर्मी, घटना-प्रधान उपन्यासों की परम्परा की नींव डाली।	रसखान अमीर खुसरो खुमान (रीति कालीन कवि)	*
ग	गजानन माधव 'मुक्तिबोध' 13-11-1917 ग्वालियर	 गजानन माधव मुक्तिबोध	माधवजी ने कवि, चिंतक, विचारक,आलोचक,कथाकार और पत्रकार के रूप में हिंदी साहित्य की अनन्य सेवा की। इन्हे हिंदी के शिल्पी कहा जाता है	गया प्रसाद'सनेही'	
घ	घनानंद रीतिकालीन कवि	घनानंद स्वच्छंद काव्याधार के प्रमुख कवि है। इस धार के प्रायः सभी गुण इनकी शैली में मिल जाते हैं, जैसे भावात्मकता, वक्रता, लाक्षणिकता, भावों की वैयक्तिकता, रहस्यात्मकता, मार्मिकता, स्वच्छंदता आदि।काव्य सौदर्य के अतिरिक्त रचना विस्तार की दृष्टी से भी घानानंद महाकवियों में गिने जाते हैं।				
ङ	*	*	*	*	*

च	चन्द्रधरशर्म गुलेरी 07-07-1883 जयपुर		गुलेरीजी कहानिकार के रूप में ही अधिक विख्यात हैं।साहित्य-सृजना में नया गद्य और नयी शैली लेकर अवतरित हुए।	चन्द्रबली पाण्डेय	*
छ	छिताई वार्ता(कृति) 1560 नारायणदास	नारायणदास "छिताई वार्ता" के रचयिता थे। जिन्होने कल्पना और इतिहास के बल पर अपनी कथा का निर्माण किया। इसकी नायिका छिताई देवगिरि के राजा रामदेव यादव की कन्या थी, जो ढोल समुदगढ़ के राजकुमार से प्रेम करती थी। इसकी भाषा राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा है तथा इसमें दोहा-चौपाई सैली का प्रयोग किया गया है।			
ज	जयशंकर प्रसा 1889 वारणासी	 Jaishankar Prasad	प्रसादजी ने प्रेम और सौंदर्य को शाश्वत सत्य मानकर मानवतावादी भूमि पर प्रतिष्टापित किया।मानव की मंगलकामना से प्रेरित कला और कल्पना के सूक्ष्म तत्वों से पुष्ट उनका साहित्य नये युग की सुंदर धरोहर है।	जगन्नाथ दास "रत्नाकर" जगदीश चन्द्र माथुर	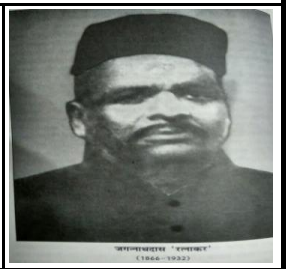
झ	झाबरमल्ल शर्म 23-01-1888 खेतडी के जसरापुर गाँव		झाबरमल्ल शर्मजी को हिंदी पत्रकारिता के स्वर्ण युग के "जीवंत स्मारक और विश्वकोश" कहा जाता है। इन्हे भाषा के सजग प्रहरी भी कहा जता है।	छीतस्वामी , छत्रपा	*
ञ	*	*	*	*	*

ट	टोडर मल-महाराजा संवत 1580	टोडर मल -महाराजा इनका जन्म संवत 1540 में और मृत्यु 1646 में हुई। ये जाति के खत्री थे।इन्होने शाही दफ्तरों में हिंदी के स्थान पर फारसी का प्रचार किया जिससे हिंदुओं का झुकाव फारसी की शिक्षा की ओर हुआ।ये प्रायः निति संबंधी पद्य कहते थे। ये कुछ दिन शेरशाह के यहाँ ऊँचे पद पर थे। अकबर के यहाँ भी थे।		
ठ	ठाकुर जगन्मोहन सिंह सन 1857 मध्यप्रदेश के विजयराघवगढ		जगनमोहन जी को प्रकृति और प्रेम के अनूठे चितरे कहा जता है। इन्होने आधिनिक साहित्य को नये रूप-रंग के ढरें पर आगे बढाया और उसकी पुरानी चाल-ढाल को भी सुरक्षित रखा।	ठाकुरदास
ड	डोंभिपा सन 840, मगध	मगध के क्षत्रीय वंश में ८४० ई के लगभग इनका जन्म हुआ था। विरूपा से इन्होने दीक्षा ली थी। इनके द्वारा रचित इक्कीस ग्रन्थ बताये जाते हैं। जिनमें डोम्बि-गीतिका, योगचार्य, अक्षरव्दिकोपदेश आदि विशेष प्रसिद्ध हैं।		
ढ	ढोला-मारू रा दूहा प्राचीन कृति -कल्लोल 1473	ग्यारहवीं शताब्दी में रचित यह एक लोकभाषा काव्या है। पश्चिमी हिंदी प्रदेश (राजास्थान) में यह काव्य अत्यंत लोकप्रिय रह है। मूलतः दोहों में रचित इस लोककाव्य को सत्रहवी शताब्दी में कुशलराय वाचक ने कुछ चौपाइयाँ जोड़कर विस्तार किया। इसमें ढोला नामक राजकुमार और मारवणी नामक राजकुमारी की प्रेम कथा है।		
ण	फणीश्वरनाथ "रेणु" 04-03-1921 बिहार के औराही हिंगना गाँव		आजादी के बाद के कथा साहित्य में रेणुजी भाव, भाषा, शैली और "ठेठ देशीयता" का विशिष्ट रंग-ढंग लिये अलग धरातल पर खडे दिखाई देते हैं। इन्हे ग्रामांजल के शिल्पी कहते हैं।	*

त	तुलसी दास 1532 राजापुर उत्तरप्रदेश	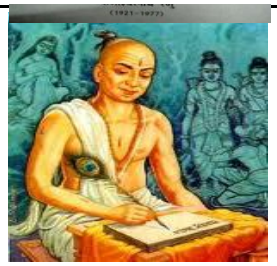	भगवान राम के अनन्य भक्त तुलसी दासजी सगुण भक्तिधारा के राम भक्ति शाखा के प्रवर्तक हैं। रामचरितमानस इनका उत्कृष्ट कृति है।	तारा मोहन मित्र तोषनिधि	*
थ	गोरख नाथ 845 इ	गोरखनाथ नाथ-साहित्य के आरम्भकर्ता माने जाते हैं। गोरखनाथ ने हठयोग का उपदेश दिया। गोरखनाथ की कविताओं से यह स्पष्ट है कि भक्तिकालीन संत मार्ग के भवपक्ष पर ही उनका प्रभाव नही पड़ा, भाषा और छन्द भी प्रभावित हुए हैं। इस प्रकार उनकी रचनाओं में हमें आदिकाल की शक्ति छिपि मिलती है,जिसने भक्तिकाल की कई प्रवृत्तियों को जन्म दिया।			
द	देवकी नन्दन खत्री 18-6-1861 मुजफ्फरपुर		खत्रीजी ने शैशवकालीन हिंदी उपन्यास लेखन के दौर में नितांत भिन्न और सघन रचना संसार को जन्म दिया।	दादू दयाल	*
ध	धर्मवीर भारती 25-12-1926 इलहाबाद	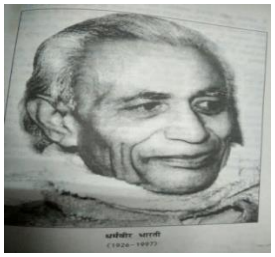	भारतीजी कलावादी कलाकार थे। भारतीजी जीवन को अपनी खुली आँखों से देखना और समझना चाहते थे,समग्र धरती के आँचल में पसरे बिम्बों से एकाकार होना चाहते थे।	धूमिल धीरेंद्रवर्मा	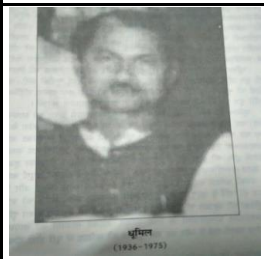
न	निर्मल वर्मा 03-04-1929 शीमला	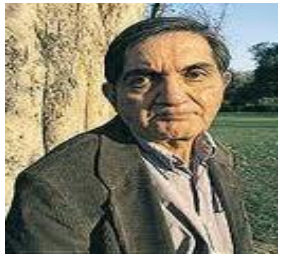	हिन्दी के एक मूर्धन्य कथाकार और पत्रकार थे।अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर भारतीय और पश्चिम की संस्कृतियों के अंतर्द्वन्द्व पर गहनता एवं व्यापकता से विचार किया है।	नरेश मेहता नागार्जुन	

प	प्रेमचंद 31-07-1880 बनारस के लमही गाँव		प्रेमचंद के साहित्य में वास्तविकता का रंग इतना चटकीला है कि उनके कलात्मक नियम भी जीवन प्रसंगों से संबद्ध है। इन्हे "कथा साम्राट"कहा जाता है।	पीताम्बरदत्त बडथ्वाल	
फ़	फ़ादरकामिल बुल्के 01-09-1909 बेल्जियम के फ्लैंडर्स		हिंदी के इस धर्मयोद्धा ने यूरोपीय भाषाओं की तुलना में हिंदी की संमृद्धि के गुण गाया।अपनी तुलसी भक्ति और हिंदी प्रेम से हिंदी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बनाया।		फुंदन लाल शाह
ब	बाबू गुलाबराय 17-01-1888 इटवा		गुलाबराय की साहित्यिक सर्जना मूलतः आलोचना और निबंध में मुखरित है। हास्य-व्यंग्य गुलाबरायजी की निबंधों की बहुत बडी शक्ति बना।इन्हे "स्वाभाविक सहजता के प्रणेता" कहते हैं।		बालमुकुंद गुप्त
भ	भीष्म साहनी 08-08-1915 रावलपिंड (पाकिस्थान)	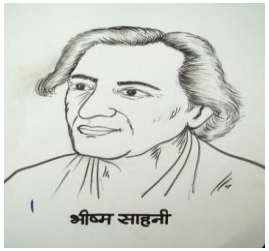	भीष्म साहनीजी ने एक संवेदनशील कलाकार का दिल पाया था।जो उन पर बराबर सृजनात्मक दबाव बनाता रहा।	भगवती चरण वर्मा भारतेंदू हरिश्चंद्र	
म	मैथिली शरण गुप्त 03-08-1886 झाँसी जिले के चिरगाँव		राष्ट्रकवि गुप्तजी ने हिंदी काव्यधारा को नयी दिश में मोडकर उसका नवीन संस्कार किया तथा उसे युगचेतना से अनुप्राणित करजन-जीवन के बीच पहुँचा दिया।	महादेवी वर्मा	

य	यशपाल 03-08-1903 फिरोजपुर, छावनी		यसपालजी ने कल्पना की बुनियादी भूमिका को नकारकर साहित्य के माध्यम से वैचारिक क्रांति की पृष्टभूमि तैयार की ।प्रगतिशील कथाकारों में इनका नाम महत्वपूर्ण है।	यशोनंदन युगलानन्याशरण	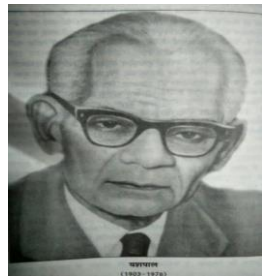
र	रामधारी सिंह "दिनकर" 30-09-1908 बिहार के सिमरिया		दिनकरजी ने गद्य में वैविध्यपूर्ण और उत्कृष्ट रचनाएँ दीं ।उन्होने एक सफल निबंधकार, समीक्षक, संस्कृति व्याख्याता ,कवि के रूप में खास योगदान दिया है।	रैदास राहुल सांकृत्यायन	
ल	लक्ष्मी नारायण मिश्र 18-12-1903 अज़मगढ़ जिले के बस्ती गाँव	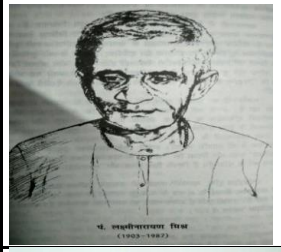	आधुनिक हिंदी नाटक क्षेत्र में मिश्रजी समस्या-नाट्य शैली के जन्मदाता के रूप में विख्यात हैं। इनका समग्र व्यक्तित्व भारतीय संस्कारों परंपराओं तथा मर्यादाओं से अनुशासित था।		लालदास ललचंद
व	विष्णु प्रभाकर 21-06-1912 उमुजफ्फरनगर जिले के मीरापुर		विष्णु प्रभाकर ने अपनी लेखनी से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई।विष्णु प्रभाकर पर महात्मा गाँधी के दर्शन और सिद्धांतों का गहरा असर पड़ा।	वृंदावन लाल वर्मा	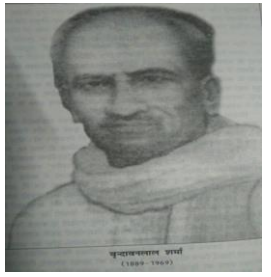

श	श्रीलाल शुक्ल 31-12-1925 लखनऊ के अतरौली गाँव,	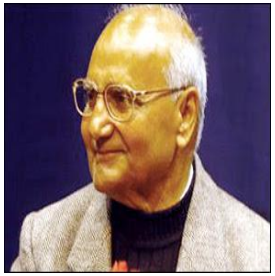	उपन्यासकार व व्यंग्यकार के रूप में प्रतिष्ठित इन्होने 130 से अधिक पुस्तकों की रचना की है। 1949 में राज्य सिविल सेवा (पी.सी.एस.) में चयनित, 1983 में भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस.) से सेवानिवृत्त।	शिवपूजन सहाय श्रीधर पाठक	
ष	उषादेवी मित्र 1897 जबलपुर		प्रेमचंद युगीन महिला कथाकारों में अग्रणी उषाजी ने अपनीमौलिक प्रतिभा द्वारा हिंदी कथा साहित्य को वैविद्ध्यमय रूप दिया। इन्हे "वैविध्यमय जीवन की चितेरी"कहा जाता है।		*
स	सूरदास 1540 रुणकता		भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त सूरदासजी जन्मांध कवि थे। सगुण भक्तिधारा के कृष्णभक्ति शाखा के प्रवर्तक हैं।	सुमित्रा नंदन पंत सुभद्राकुमारी चौहान सूर्य कांत त्रिपाटी निराला	
ह	हरिशंकर परसाई 22-08-1924 मध्यप्रदेश जमानी गाँव	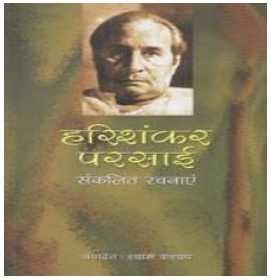	कलम को लेखक की तलवर मानने वाले परसाईजी हिंदी साहित्य जगत की एक बेजोड़ हैं।	हरिवंश राय बच्चन	

2015-16

H.V.GOVINDARAJA SETTY, ASSISTANT MASTER

GOVT HIGH SCHOOL, DODDAHALLI-572141 , PAVAGADA TALUK

TUMKUR DIST, KARNATAKA, MOB:94803 10454